इकाई 11 वाच्य परिचय तथा लकारों के कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के केवल अन्य पुरुष के रूप

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 संस्कृत वाच्य परिचय

11.2.1 संस्कृत वाच्य के प्रकार

11.2.2 वाच्य परिवर्तन

11.3 लट् लकार के कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के रूप

11.4 बोध/ अभ्यास प्रश्न

11.5 सारांश

11.6 शब्दावली

11.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.8 बोध/ अभ्यास प्रश्नों का उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत भाषा में वाच्यों का परिचय कराना है। वाच्य के साथ ही साथ वाच्य परिवर्तन एवं इनकी वाक्य रचना का ज्ञान कराना भी इसका उद्देश्य है।

11.1 प्रस्तावना

संस्कृत के साथ ही साथ अन्य भाषाओं में भी वाच्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है । वाच्य के सही ज्ञान के बिना किसी भी भाषा में वाक्य निर्माण नहीं किया जा सकता है । क्रिया के द्वारा कहे गये कथन का तरीका ही वाच्य होता है । कर्ता, कर्म तथा भाव में से किसी एक को क्रिया द्वारा कहा जाता है। वाच्य- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य होता है । संस्कृत भाषा में भी तीन वाच्य होते हैं । इन्हें कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य कहा जाता है । जब क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है अतः तब इसे "कर्तृवाच्य" कहा जाता है । कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है अर्थात् इसमें कर्म की प्रधानता होती है अतः इसे "कर्मवाच्य" कहते हैं ।

भाववाच्य केवल अकर्मक क्रियाओं के लिए होता है । इन सभी वाच्यों का परिचय इस इकाई में कराया जाएगा।

11.2 संस्कृत वाच्य परिचय

जैसा कि प्रस्तावना में ही स्पष्ट किया जा चुका है कि संस्कृत में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य तीन प्रकार के वाच्य होते हैं । कर्तृवाच्य में कर्त्ता की प्रधानता होती है एवं क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है । साथ ही साथ कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है । कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। अर्थात् क्रिया कर्म के आधार पर प्रयुक्त होती है एवं कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है एवं क्रिया आत्मनेपदी होती है। भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है। भाववाच्य में अकर्मक धातुओं का प्रयोग होता है एवं कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है ।

अब हम वाच्य को उदाहरण के अनुसार समझने का प्रयास करते हैं । उदाहरण के लिए जब हम कहते हैं कि 'गच्छति' (जाता है) । ऐसा कहने पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि "कः गच्छति ?" (कौन जाता है?) । इसका उत्तर है "कोऽपि गमन कर्त्ता गच्छति" (कोई जाने वाला कर्त्ता जाता है) । इसमें हम देखते हैं कि यहाँ क्रिया के द्वारा कर्त्ता को सूचित किया जाता है । अर्थात् क्रिया कर्त्ता को सूचित करती है । अतः 'गच्छति' कर्तृवाच्य है । उदाहरण के लिए-

i) रामः पुस्तकं पठति ।

ii) शिक्षकः श्लोकं पाठयति ।

वहीं दूसरी तरफ 'पठ्यते' (पढ़ा जाता है) । ऐसा कहे जाने पर भी प्रश्न उत्पन्न होता है कि "किम् पठ्यते?" (क्या पढ़ा जाता है ?) इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि "कोऽपि ग्रन्थः/ पुस्तकम्/ लेखः वा पठ्यते।" (कोई भी ग्रन्थ अथवा कोई पुस्तक अथवा लेख पढ़ा जाता है ।) इससे स्पष्ट होता है कि यहाँ पर क्रिया से कर्म को कहा गया है । अतः 'पठ्यते' कर्मवाच्य है । उदाहरण के लिए-

i) रामेण गृहं गम्यते ।

ii) मोहनेन ग्रन्थः पठ्यते ।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि क्रियाएँ सकर्मक एवं अकर्मक भेद से दो प्रकार की होती हैं । जहां पर कर्म की अपेक्षा होती है, उसे "सकर्मक" कहा जाता है । जैसे- रामः खादति । यहाँ पर 'खादति' क्रिया में यह अपेक्षा होती है कि क्या खाता है? जिसका उत्तर होगा कोई खाद्य सामग्री जैसे- भोजन, फल आदि । एवं जहाँ पर

इस प्रकार की कोई अपेक्षा नहीं होती है, उसे अकर्मक क्रिया कहा जाता है । जैसे- सः शेते । इस वाक्य में शेते क्रिया की कोई अपेक्षा नहीं है कि क्या सो रहा है? ऐसी क्रियाओं को "अकर्मक क्रिया" कहा जाता है। कर्तृवाच्य सभी सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाओं दोनों का हो सकता है। परन्तु कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं का ही होता है । वहीं भाववाच्य केवल अकर्मक क्रियाओं का ही होता है ।

11.2.1 संस्कृत वाच्य के प्रकार

संस्कृत भाषा में तीन वाच्य होते हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य । इनका विवरण निम्नलिखित है-

1) कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में कर्त्ता की प्रधानता होती है । अर्थात् कर्त्ता के अनुसार ही क्रिया लगती है । इसलिए क्रिया में लिङ्ग (केवल कृदन्त रूपों के लिये ही), पुरुष व वचन, कर्त्ता के लिङ्ग एवं वचन के अनुसार होता है। कर्तृवाच्य सकर्मक एवं अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से होता है । इसमें कर्त्ता में सदैव प्रथमा विभक्ति एवं कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति एवं कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है। इसको हम एक सरल उदाहरण से समझते हैं । जैसे- रामः फलं खादति । (राम फल खाता है ।)

प्रस्तुत वाक्य में कर्त्ता है राम, कर्म है फल एवं क्रिया है खाद् । अतः इस वाक्य में कर्त्ता अर्थात् राम में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग हुआ है । चूंकि राम एक है अतः प्रथमा एकवचन का प्रयोग किया गया है । यहाँ "फल" कर्म है । अतः इसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है । यहाँ भी एक होने के कारण द्वितीया एकवचन का प्रयोग किया गया है । क्रिया खाद् है, यह क्रिया कर्त्ता अर्थात् राम के अनुसार प्रयुक्त हुई है । "राम" यह प्रथम पुरुष का कर्त्ता है अतः क्रिया भी प्रथम पुरुष की प्रयुक्त हुई है । राम में एकवचन है अतः क्रिया में भी प्रथमपुरुष एकवचन का प्रयोग किया गया है ।

"त्वं पुस्तकानि पठसि" इस वाक्य में कर्त्ता है त्वम्, कर्म है पुस्तकम् एवं क्रिया है पठ्। इसमें क्रिया में परिवर्तन हो गया क्योंकि कर्त्ता परिवर्तित हो गया है । "त्वम्" मध्यमपुरुष एकवचन का कर्त्ता है अतः क्रिया भी मध्यमपुरुष एकवचन की ही प्रयुक्त हुई है । यहाँ कर्म में बहुवचन का प्रयोग हुआ है । कर्म में परिवर्तन होने से क्रिया में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ । क्योंकि कर्तृवाच्य में क्रिया सदैव कर्त्ता के अनुसार ही लगती है। इसी प्रकार अहं गृहं गच्छामि, सः त्वां पश्यति, त्वं मां

पश्यसि आदि वाक्यों में भी समझना चाहिए ।

2) कर्मवाच्य

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें कर्म की प्रधानता होती है । अर्थात् क्रिया कर्म के अनुसार लगती है । क्रिया में लिङ्ग, पुरुष व वचन, कर्म के अनुसार होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कर्म का जो लिङ्ग, पुरुष एवं वचन होगा क्रिया भी उसी पुरुष एवं वचन की प्रयुक्त होगी। कर्मवाच्य में कर्त्ता में सदैव तृतीया विभक्ति होती है। कर्म हमेशा प्रथमा विभक्ति में होता है । क्रिया कर्म के अनुसार होती है। ध्यान रहे कर्मवाच्य केवल सकर्मक धातुओं का ही होता है। अकर्मक धातुओं का भाववाच्य होता है । यहां पर क्रियारूप आत्मनेपद में ही होता है। केवल धातु एवं प्रत्यय के मध्य "य्" जोड़ दिया जाता है। जिसकी विधि नीचे तालिका में प्रदान की गई है। जिसकी सहायता से लट्लकार (वर्तमान काल) में रूप बनाया जा सकता है।

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	धातु+य+ते पठ्+य+ते = पठ्यते गम्+य+ते = गम्यते	धातु+ये+ते पठ्+ये+ते = पठ्येते गम्+ये+ते = गम्येते	धातु+य+न्ते पठ्+य+न्ते = पठ्यन्ते गम्+य+न्ते = गम्यन्ते
मध्यम पुरुष	धातु+य+से पठ्+य+से = पठ्यसे गम्+य+से = गम्यसे	धातु+ये+थे पठ्+ये+थे = पठ्येथे गम्+ये+थे = गम्येथे	धातु+य+ध्वे पठ्+य+ध्वे = पठ्यध्वे गम्+य+ध्वे = गम्यध्वे
उत्तम पुरुष	धातु+य्+ए पठ्+य्+ए = पठ्ये गम्+य्+ए = गम्ये	धातु+या+वहे पठ्+या+वहे = पठ्यावहे गम्+या+वहे = गम्यावहे	धातु+या+महे पठ्+या+महे = पठ्यावहे गम्+या+महे = गम्यामहे

उपरोक्त तालिका में दिए गए नियमों के अनुसार हमें बस धातु को परिवर्तित करके

सभी को मिला कर किसी भी धातु का रूप बना लेना है । एवं आवश्यकता पड़ने पर इन्हीं रूपों का प्रयोग कर्मवाच्य में किया जा सकता है ।

3) भाववाच्य

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है अकर्मक धातुओं का कर्मवाच्य के समान रूप का जिसमें प्रयोग दिखलाई देता है, वह भाववाच्य का प्रयोग होता है । भाववाच्य में क्रिया केवल भाव को सूचित करती है । एवं भाव में सदैव केवल प्रथम पुरुष एकवचन का प्रयोग होता है । भाववाच्य में क्रिया, कर्त्ता के लिङ्ग, पुरुष व वचन के अनुसार नहीं होती है । भाववाच्य में भी कर्त्ता तृतीया विभक्ति में ही प्रयुक्त होता है । जैसे- तेन हस्यते, मया हस्यते, त्वया हस्यते, रामेण सुप्यते, मया सुप्यते, त्वया सुप्यते, आदि वाक्यों में । इन उदाहरणों में कर्त्ता में परिवर्तन होने के बाद भी क्रिया में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है ।

11.2.2 वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य के वाक्य को कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में या कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के वाक्य को कर्तृवाच्य में आसानी से परिवर्तित किया जा सकता है । इसी परिवर्तन को "वाच्य परिवर्तन" कहा जाता है । इसके लिए हमें ज्यादा कुछ नहीं करना है । बस वाक्य देखना है एवं अपेक्षित (परिवर्तन करने वाले) वाच्य के नियमानुसार उन्हीं शब्दों का प्रयोग करके नए वाच्य का वाक्य बना देना है । उदाहरण के लिए, कर्तृवाच्य के वाक्य "रामः गृहं गच्छति" को हमें अगर कर्मवाच्य में परिवर्तित करना है तो हमें सबसे पहले कर्त्ता, कर्म एवं क्रिया को परिवर्तित करना होगा । जैसा कि हमें पता है कि कर्मवाच्य में कर्त्ता तृतीया विभक्ति में, कर्म प्रथमा विभक्ति में एवं क्रिया कर्म के अनुसार होती है । इस वाक्य में कर्त्ता है राम, कर्म है गृह एवं क्रिया है गम् । इन तीनों में कर्मवाच्य के नियम लगाने हैं अर्थात् कर्त्ता में तृतीया विभक्ति 'रामेण', कर्म में प्रथमा 'गृहम्' एवं क्रिया कर्म के अनुसार अर्थात् प्रथम पुरुष की गम्यते करने पर वाच्य परिवर्तन हो जाता है । एवं नया वाक्य "रामेण गृहं गम्यते" बनता है।

इसी प्रकार अगर कोई कर्मवाच्य के वाक्य का कर्तृवाच्य में परिवर्तन करना हो तो हमें कर्तृवाच्य के नियमों को लगाना होगा । कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया एवं क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है । उदाहरण के लिए- "मया पुस्तकम् पठ्यते ।" इस वाक्य में कर्ता है अस्मद्, कर्म है पुस्तक एवं क्रिया है पठ् । इसको कर्तृवाच्य में परिवर्तन अस्मद् में प्रथमा, पुस्तक में द्वितीया एवं क्रिया अस्मद् के अनुसार करने पर "अहं पुस्तकं पठामि" वाक्य बनेगा । इसी प्रकार भाववाच्य भी समझना चाहिए । नीचे कुछ वाक्य एवं उनका वाच्य परिवर्तन दिया गया है ।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
अहं श्लोकं पठामि।	मया श्लोकः पठ्यते।
अहं श्लोकौ पठामि।	मया श्लोकौ पठ्येते।
अहं श्लोकान् पठामि।	मया श्लोकाः पठ्यन्ते।
अहं पुस्तकं पठामि।	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं पुस्तके पठामि।	मया पुस्तके पठ्येते।
अहं पुस्तकानि पठामि।	मया पुस्तकानि पठ्यन्ते।
अहं कथां पठामि।	मया कथा पठ्यते।
अहं कथे पठामि।	मया कथे पठ्येते।
अहं कथाः पठामि।	मया कथाः पठ्यन्ते।
सः पठति।	तेन पठ्यते।
तौ पठतः।	ताभ्याम् पठ्यते।
ते पठन्ति।	तैः पठ्यते।
सा पठति।	तया पठ्यते।
ते पठतः।	ताभ्याम् पठ्यते।
ताः पठन्ति।	ताभिः पठ्यते।
त्वं पठसि।	त्वया पठ्यते।
युवां पठथः।	युवाभ्याम् पठ्यते।
यूयं पठथ।	युष्माभिः पठ्यते।
अहं पठामि।	मया पठ्यते।
आवां पठावः।	आवाभ्याम् पठ्यते।
वयं पठामः।	अस्माभिः पठ्यते।
अयं बालकः पठति।	एतेन बालकेन पठ्यते।
एषः बालकः पठति।	अनेन बालकेन पठ्यते।
इयं बालिका पठति।	अनया बालिकया पठ्यते।
इमौ बालकौ पठतः।	आभ्यां बालकाभ्यां पठ्यते।
इमे बालिके पठतः।	आभ्यां बालिकाभ्यां पठ्यते।
इमे बालकाः पठन्ति।	एभिः बालकैः पठ्यते।।

इमाः बालिकाः पठन्ति। आभिः बालिकाभिः पठ्यते।

11.3 लट् लकार के कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के रूप

	कर्तृवाच्य			कर्मवाच्य		
पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पठ् (पढ़ता) धातु						
प्रथमपुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति	पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
मध्यमपुरुष	पठसि	पठथः	पठथ	पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
उत्तमपुरुष	पठामि	पठावः	पठामः	पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे
गम् (जाना) धातु						
प्रथमपुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
मध्यमपुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
उत्तमपुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः	गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे
लिख् (लिखना) धातु						
प्रथमपुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति	लिख्यते	लिख्येते	लिख्यन्ते
मध्यमपुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ	लिख्यसे	लिख्येथे	लिख्यध्वे
उत्तमपुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः	लिख्ये	लिख्यावहे	लिख्यामहे
पा (पीना) धातु						
प्रथमपुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति	पीयते	पीयेते	पीयन्ते
मध्यमपुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ	पीयसे	पीयेथे	पीयध्वे
उत्तमपुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः	पीये	पीयावहे	पीयामहे
चल् (चलना) धातु						
प्रथमपुरुष	चलति	चलतः	चलन्ति	चल्यते	चल्येते	चल्यन्ते
मध्यमपुरुष	चलसि	चलथः	चलथ	चल्यसे	चल्येथे	चल्यध्वे
उत्तमपुरुष	चलामि	चलावः	चलामः	चल्ये	चल्यावहे	चल्यामहे
भू (होना) धातु						
प्रथमपुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति	भूयते	भूयेते	भूयन्ते
मध्यमपुरुष	भवसि	भवथः	भवथ	भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे

उत्तमपुरुष	भवामि	भवावः	भवामः	भूये	भूयावहे	भूयामहे
हस् (हँसना) धातु						
प्रथमपुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति	हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
मध्यमपुरुष	हससि	हसथः	हसथ	हस्यसे	हस्येथे	हस्यध्वे
उत्तमपुरुष	हसामि	हसावः	हसामः	हस्ये	हस्यावहे	हस्यामहे
गी (गाना) धातु						
प्रथमपुरुष	गायति	गायतः	गायन्ति	गीयते	गीयेते	गीयन्ते
मध्यमपुरुष	गायसि	गायथः	गायथ	गीयसे	गीयेथे	गीयध्वे
उत्तमपुरुष	गायामि	गायावः	गायामः	गीये	गीयावहे	गीयामहे
नी (ले जाना) धातु						
प्रथमपुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति	नीयते	नीयेते	नीयन्ते
मध्यमपुरुष	नयसि	नयथः	नयथ	नीयसे	नीयेथे	नीयध्वे
उत्तमपुरुष	नयामि	नयावः	नयामः	नीये	नीयावहे	नीयामहे
नृत् (नाचना) धातु						
प्रथमपुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति	नृत्यते	नृत्येते	नृत्यन्ते
मध्यमपुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ	नृत्यसे	नृत्येथे	नृत्यध्वे
उत्तमपुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः	नृत्ये	नृत्यावहे	नृत्यामहे
पच् (पकाना) धातु						
प्रथमपुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति	पच्यते	पच्येते	पच्यन्ते
मध्यमपुरुष	पचसि	पचथः	पचथ	पच्यसे	पच्येथे	पच्यध्वे
उत्तमपुरुष	पचामि	पचावः	पचामः	पच्ये	पच्यावहे	पच्यामहे
दृश् (देखना) धातु						
प्रथमपुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	दृश्यते	दृश्येते	दृश्यन्ते
मध्यमपुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	दृश्यसे	दृश्येथे	दृश्यध्वे
उत्तमपुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः	दृश्ये	दृश्यावहे	दृश्यामहे
वृष् (वर्षा करना) धातु						
प्रथमपुरुष	वर्षति	वर्षतः	वर्षन्ति	वृष्यते	वृष्येते	वृष्यन्ते
मध्यमपुरुष	वर्षसि	वर्षथः	वर्षथ	वृष्यसे	वृष्येथे	वृष्यध्वे

उत्तमपुरुष	वर्षामि	वर्षावः	वर्षामः	वृष्ये	वृष्यावहे	वृष्यामहे
कथ् (कहना) धातु						
प्रथमपुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति	कथ्यते	कथ्येते	कथ्यन्ते
मध्यमपुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ	कथ्यसे	कथ्येथे	कथ्यध्वे
उत्तमपुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः	कथ्ये	कथ्यावहे	कथ्यामहे
पूज् (पूजा करना) धातु						
प्रथमपुरुष	पूजयति	पूजयतः	पूज्यन्ति	पूज्यते	पूज्येते	पूज्यन्ते
मध्यमपुरुष	पूजयसि	पूजयथः	पूजयथ	पूज्यसे	पूज्येथे	पूज्यध्वे
उत्तमपुरुष	पूजयामि	पूजयावः	पूजयामः	पूज्ये	पूज्यावहे	पूज्यामहे
कृ (करना) धातु						
प्रथमपुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
मध्यमपुरुष	करोसि	कुरुथः	कुरुथ	क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
उत्तमपुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे
रक्ष् (रक्षा करना) धातु						
प्रथमपुरुष	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति	रक्ष्यते	रक्ष्येते	रक्ष्यन्ते
मध्यमपुरुष	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ	रक्ष्यसे	रक्ष्येथे	रक्ष्यध्वे
उत्तमपुरुष	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः	रक्ष्ये	रक्ष्यावहे	रक्ष्यामहे
पत् (गिरना) धातु						
प्रथमपुरुष	पतति	पततः	पतन्ति	पत्यते	पत्येते	पत्यन्ते
मध्यमपुरुष	पतसि	पतथः	पतथ	पत्यसे	पत्येथे	पत्यध्वे
उत्तमपुरुष	पतामि	पतावः	पतामः	पत्ये	पत्यावहे	पत्यामहे
लभ् (प्राप्त करना/पाना) धातु						
प्रथमपुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते	लभ्यते	लभ्येते	लभ्यन्ते
मध्यमपुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे	लभ्यसे	लभ्येथे	लभ्यध्वे
उत्तमपुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे	लभ्ये	लभ्यावहे	लभ्यामहे
हन् (मारना) धातु						
प्रथमपुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति	हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते
मध्यमपुरुष	हंसि	हथः	हथ	हन्यसे	हन्येथे	हन्यध्वे

उत्तमपुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः	हन्ये	हन्यावहे	हन्यामहे
क्रीड् (खेलना) धातु						
प्रथमपुरुष	क्रीडति	क्रीडतः	क्रीडन्ति	क्रीड्यते	क्रीड्येते	क्रीड्यन्ते
मध्यमपुरुष	क्रीडसि	क्रीडथः	क्रीडथ	क्रीड्यसे	क्रीड्येथे	क्रीड्यध्वे
उत्तमपुरुष	क्रीडामि	क्रीडावः	क्रीडामः	क्रीड्ये	क्रीड्यावहे	क्रीड्यामहे
क्री (खरीदना) धातु						
प्रथमपुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	क्रीयते	क्रीयेते	क्रीयन्ते
मध्यमपुरुष	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	क्रीयसे	क्रीयेथे	क्रीयध्वे
उत्तमपुरुष	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	क्रीये	क्रीयावहे	क्रीयामहे

11.4 बोध/ अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य परिवर्तन कीजिए ।

   i) छात्रः पुरस्कारं गृह्णाति ।

   ii) छायाकार : छायाचित्रं रचयति ।

   iii) अहं लेखं लिखामि ।

   iv) वृक्षाः फलानि ददति ।

   v) छात्राः गुरून् नमन्ति ।

   vi) पापी पापं करोति ।

   vii) विद्या विनयं ददाति ।

   viii) अहं पितरं सेवे ।

   ix) त्वं मां पृच्छति ।

   x) नृपः शत्रुं हन्ति ।

   xi) सर्पाः पवनं पिबन्ति ।

   xii) वृद्धः वेदान् पठति ।

   xiii) त्वं कथां शृणोषि ।

   xiv) अहं मोहं त्यजामि ।

   xv) रामेण जनकः प्रणम्यते ।

   xvi) भवान् भ्रमणाय गच्छति ।

xvii) दिव्या गीतां पठति ।

xviii) मया फलानि खाद्यन्ते ।

xix) कृष्ण: कंसं हन्ति ।

xx) अहं तु समाचारान् श्रृणोमि ।

2. निम्नलिखित धातु रूपों का कर्मवाच्य में रूप लिखिए ।

श्रृणोति, करोति, भवति, पठति, गच्छति, पतति, रक्षति, पिबति, चलति, नृत्यति, हन्ति, पश्यति, लभते, ददाति, नयति, गायति ।

3. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए ।

i) .....पुस्तकं पठति ।

ii) .....पुस्तकं नीयते ।

iii) .....जलं पीयते ।

iv) मया..... लिख्यते ।

v) त्वया..... गम्यते ।

vi) तेन..... गीयते ।

vii) ..... नृत्यति ।

viii)रामेण..... लभ्यते ।

11.5 सारांश

संस्कृत भाषा में तीन वाच्य होते हैं । कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य । कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है । कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होने के कारण क्रिया कर्म के अनुसार होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है । भाववाच्य अकर्मक क्रिया के योग में होता है । भाववाच्य में भाव की अर्थात् क्रिया की प्रधानता होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

11.6 शब्दावली

वाच्य — जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है।

कर्तृवाच्य — जिसमें कर्त्ता की प्रधानता होती है ।

कर्मवाच्य	जिसमें कर्म की प्रधानता होती है ।
भाववाच्य	जिसमें भाव की प्रधानता होती है ।
सकर्मक	जहाँ पर कर्म की अपेक्षा हो ।
अकर्मक	जहाँ पर कर्म की अपेक्षा न हो ।

11.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) चक्रधर नौटियाल हंस, अनुवाद चन्द्रिका, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर, दिल्ली, 2013.

2) कपिल द्विवेदी, रचनानुवादकौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2019.

3) ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, रूपचन्द्रिका, चौखम्बा सुरभारती, 2020.

4) गिरीश नाथ झा, व्यावहारिक संस्कृत धातुरूपावली, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2015.

5) मुरारीलाल शर्मा, संस्कृत- शब्द- धातु- रूपावली, हंसा प्रकाशन जयपुर, 2012.

6) ई-टूल्स: http://sanskrit.jnu.ac.in/tinanta/tinanta.jsp

7) ई-टूल्स: http://cl.sanskrit.du.ac.in

11.8 बोध/ अभ्यास प्रश्नों का उत्तर

1. निम्नलिखित का वाच्य परिवर्तन ।

   i) छात्रेण पुरस्कारः गृह्यते ।

   ii) छायाकारेण छायाचित्रं रच्यते ।

   iii) मया लेखः लिख्यते ।

   iv) वृक्षैः फलानि दीयन्ते ।

   v) छात्रैः गुरवः नम्यन्ते ।

   vi) पापिना पापं क्रियते ।

   vii) विद्यया विनयः दीयते ।

   viii) मया पिता सेव्यते ।

   ix) त्वया अहं पृच्छ्ये ।

   x) नृपेण शत्रुः हन्यते ।

xi) सर्पैः पवनः पीयते ।

xii) वृद्धेन वेदाः पठ्यन्ते ।

xiii) त्वया कथा श्रूयते ।

xiv) मया मोहः त्यज्यते ।

xv) रामः जनकं प्रणमति ।

xvi) भवता भ्रमणाय गम्यते ।

xvii) दिव्यया गीता पठ्यते ।

xviii) अहं फलानि खादामि ।

xix) कृष्णेन कंसः हन्यते ।

xx) मया तु समाचाराः श्रूयन्ते ।

2. निम्नलिखित धातु रूपों का कर्मवाच्य में रूप लिखिए ।

श्रूयते, क्रियते, भूयते, पठ्यते, गम्यते, पत्यते, रक्ष्यते, पीयते, चल्यते, नृत्यते, हन्यते, दृश्यते, लभ्यते, दीयते, नीयते, गीयते ।

3. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए ।

i) सः पुस्तकं पठति ।

ii) तेन पुस्तकं नीयते ।

iii) मया जलं पीयते ।

iv) मया लेखः लिख्यते ।

v) त्वया गृहं गम्यते ।

vi) तेन गीतं गीयते ।

vii) सा नृत्यति ।

viii) रामेण धनं लभ्यते ।